P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

महाविद्यालयों के प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता पर अध्ययन

सारांश

अध्यापक एवं अभ्यर्थी दोनों ही समाज के ऐसे अंग है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव एक–दूसरे पर पड़ता है। अतः आज के बदलते हुए परिवेष में िक्षा के क्षेत्र में जो भी आवश्यक परिवर्तन हो रहे हैं उनमें से एक प्रक्रिया तब शिक्षकों की व्यवहार कुशलता एवं शिक्षकीय प्रभावशीलता है। शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों पर पर्याप्त पड़ता है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन में महाविद्यालयों के प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं प्रशिक्षण पूर्ण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता पर अध्ययन किया गया है। शोध कार्य हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के 5जिलों दुर्ग जिल के भिलाई शहर के अंतर्गत आने वाले महाविद्यालयों में प्रथम वर्ष में प्रवेशित –50 (25 महिला, 25 पुरूष) एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त अंतिम वर्ष के 50 (25महिला, 25पुरूष) शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया । परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं प्रशिक्षण पूर्ण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता के मध्य अंतर है।

मुख्य शब्द : शिक्षक प्रशिक्षणार्थी, शिक्षकीय प्रभावशीलता, प्रशिक्षण।

सुषमा दुबे
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय,
जुनवानी, भिलाई, छत्तीसगढ़,
भारत

गायत्री जय मिश्रा
सहप्राध्यापक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय,
जुनवानी, भिलाई, छत्तीसगढ़,
भारत

प्रस्तावना

शिक्षक राष्ट्र की ि”क्षा व्यवस्था का सूत्रधार है। राष्ट्र की शैक्षिक राजनैतिक धार्मिक और सामाजिक प्रगति शिक्षक पर आधरित है। शिक्षक एक ज्योति पुंज है जो स्वयं जलकर राष्ट्र का भविष्य उसके कन्धे पर टिका है। किसी भी राष्ट्र का निर्माण बड़े–बड़े कल कारखानों, उद्योग धंधों व अपार संपत्ति से नहीं होता। अपितु राष्ट्र का निर्माता शिक्षक ही हैं। अध्यापक के विषय में कहा गया है। एक इंजीनियर की त्रुटि से कुछ भवन और पुल टूट सकते हैं। एक डॉक्टर की त्रुटि से कुछ मरीज मर सकते हैं, किन्तु एक शिक्षक की त्रुटि से सम्पूर्ण राष्ट्र को हानि होती है। समाज के भावकों क अनुरूप बालक के व्यक्तित्व का निर्माण करना शिक्षक का कार्य है।

शिक्षक वह है जो ि”क्षा देते हैं। अर्थात् वह अपने दायित्वों का निर्वाह करता है और बालक के गुणों का विकास करता है। शिक्षक को सभी प्रकार की सूचनायें रखनी चाहिये। उसे केवल उस विषय का ही पण्डित नहीं होना चाहिये, जिसे वह पढ़ता है या उन कौ”ालों को जिनका वह छात्रों में विकास करना चाहता है। अध्यापक को आधुनिक मूल्यांकन विधियों का ज्ञान होना चाहिये तथा उसके परिणामों को दूसरों तक पहुँचाने की क्षमता होनी चाहिये। प्रभाव”ााली शिक्षक व ि”क्षिकाओं विभिन्न ि”क्षण कौ”ालों की आवश्यकता होती है – जिसके अंतर्गत धारणाओं को सही समय उपयोग छात्रों में प्रेरणा उत्पन्न करना उचित ि”क्षण योजना, सही एवं उचित ि”क्षा संबंधित उपकरणों का प्रयोग आदि प्रभाव”ााली शिक्षक व ि”क्षिकाओं के गुणों को द”र्ााते हैं (डोलॉरेस एवं अर्नेस्ट 2018)। वही इनके विपरीत जैसे विषय का ज्ञान न होना सही व ि”क्षण संबंधी उपकरणों का प्रयोग न करना आदि क्रम प्रभाव”ााली या अनुभवहोनता शिक्षकोंके गुणों को दर्शाता है।

जो लोग प्रशिक्षण के पक्ष में नहीं होते उनका विचार है कि अध्यापक को प्रशिक्षण की कोई आवश्यकता नहीं है उन्हें केवल विषय में निपुणता प्राप्त करनी चाहिये, क्योंकि प्रि”क्षित एवं अप्रि”क्षित अध्यापकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। किंतु प्रशिक्षण के द्वारा अप्रि”क्षित अध्यापकों में छात्र के व्यक्तित्व का समग्र विकास के प्रति दृष्टिकोण, अपने व्यवसाय क प्रति सकारात्मक

दृष्टिकोण, वि"ाष्ट कौ"ाल विकसित किये जाते हैं, जो कि अध्यापक प्र"ाक्षार्थियों में विकसित किये जाने आवश्यक है।

"ाक्षण व्यवसाय निःसंदेह आद"ा व्यवसाय है, इसलिये शिक्षक का कार्य उत्तरदायित्वपूर्ण है। "ाक्षा के द्वारा हम पग–पग पर अपने लक्ष्यों पर विचार करते हैं। शिक्षक–शिक्षार्थियों के संबंध जितने घनिष्ठ होंगे मानसिक अनुभव उतने ही सक्रिय होंगे, "ाक्षण अपने शिक्षक को जितने घनिष्ठ होंगे मानसिक अनुभव उतने सक्रिय होंगे। "ाक्षण अपने शिक्षक को जितने श्रेष्ठ तरीके से अभिव्यक्त कर सकता है उतना ही उसका "ाक्षण प्रभाव"ााली होगा। प्रभाव"ााली शिक्षक को मनुष्य का निर्माता, राष्ट्र निर्माता, "ाक्षा पद्धति के आधार"ाीला समाज को गति प्रदान करने वाले आदि सब कुछ माना गया है। आज परिवर्तन"ाील परिवे"ा में "ाक्षा के क्षेत्र में जो परिवर्तन हो रहे हैं। उसके प्रति प्र"ाक्षित की शिक्षकीय प्रभावशीलता का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि प्रशिक्षण ही "ाक्षण व्यवसाय में सफलता का प्रधान होता है।

अध्ययन का महत्व :

शिक्षा का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है व शिक्षक "ाक्षार्थी इसके महत्वपूर्ण अंग है जहां एक ओर "ाक्षा के वैयक्तिक क्रिया से जुड हैं वहीं दूसरी ओर समाज के वर्तमान स्वरूप से भी। प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल सामाजिक दृष्टिकोण से नहीं वरन् राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी लाभदायक है। इसमें औपचारिक "ाक्षा का उद्देश्यव्यक्ति को इस प्रकार तैयार किया जाये कि सभी कार्य संतोषप्रद व समाज के लिये हितकर हो। अंततः यह लघु शोध दुर्ग एवं भिलाई क्षेत्र के "ाक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

किसी कार्य को करने हेतु कोई न कोई उद्दे"य लेकर पूर्ण करते हैं। इसी तरह शोधकार्य करने हेतु अध्ययन का उद्दे"य जानना जरूरी होता है। आज शिक्षक ही ऐसा माध्यम है जो वर्तमान समय में विद्यार्थियों को सही मार्गद"ान लेकर देकर उनके लक्ष्य तक पहुंचाते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्न हैं–

1. प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थिया की शिक्षकीय प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

शोधकर्ता के शोध से सम्बन्धित क्षेत्र में अभी तक जो कार्य हुए है उनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं–

डोलॉरेस एवं अर्नेस्ट (2018).ने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि प्रशिक्षण और विकास का गठन प्रत्येक संस्था के मानव संसाधन प्रबंधन का एक अभिन्न अंग के रूप में हुआ और शिक्षकों का प्रदर्शन और छात्रों का खराब प्रदर्शन के बीच एक मजबूत रिश्ता है । घाना के विद्यार्थियों के प्रदर्शन में गिरावट की समस्या को हल करने में और शिक्षा के स्तर को बढाने के लिए , शिक्षकों के गुणवत्ता को बढ़ाने की आवश्यकता है। घाना शिक्षा सेवा को शिक्षकों के प्रशिक्षण में अधिक निवेश करना चाहिए। अध्ययन में पता चला है कि नियमित रूप से (2 से अधिक साल के अंतराल) प्रशिक्षण का आयोजन नहीं किया गया था और पाठ्यक्रम, और शिक्षण के नए तरीके को सीखने में सहायता के लिए केन्द्रित रखा गया, यह आगे आया प्रकाश कि शिक्षक प्रेरणा , शिक्षकों के मनोबल को बढ़ाने के लिए उन्हें बढ़ाने के लिए प्रयास बहुत कम से कम थी । यह पाया गया कि इन–सर्विस प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों के प्रदर्शन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण साबित हुये।

रॉय एवं हलदर (2018). ने अध्ययन पश्चिम बंगाल में तीन चयनित जिलों में माध्यमिक स्कूलों के 400 शिक्षकों पर किया गया था। शिक्षण क्षमता का अनुमान एक स्व–रेटिंग पैमाने से लगाया गया था, । इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के उनके लिंग, स्कूलों के इलाके और उनके पदनाम के संदर्भ में शिक्षण प्रभावशीलता में अंतर का पता लगाना था। स्कूलों के लिंग और स्थानीयता के मामले में, यह पाया गया कि शिक्षक शिक्षण पहलू और शिक्षण प्रभावशीलता के सामाजिक पहलू की अपनी रणनीतियों में भिन्न नहीं है। लेकिन, व्यक्तिगत पहलू, व्यावसायिक पहलू, शिक्षण प्रभावशीलता के बौद्धिक पहलू और शिक्षण प्रभावशीलता में सभी के बाद, शिक्षकों को उनके लिंग और स्कूलों के इलाके के कारण काफी भिन्नता मिली। पदनाम के मामले में, शिक्षकों ने शिक्षण प्रभावशीलता के सभी पहलुआ और शिक्षण प्रभावशीलता प्राप्तांकों में भी अंतर दिखा।

आमदी और अल्लागो(2017)के अध्ययन से पता चला है किउम्र, शैक्षिक योग्यता और शिक्षण के वर्षों का शिक्षकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। हालांकि, शिक्षकों के लिंग और शैक्षिक अनुशासन का उनकी कक्षा प्रबंधन प्रभावशीलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं था ।

बर्मन एवं दाश ने वर्तमान अध्ययन के माध्यम से माध्यमिक विद्यालय के शिक्षण प्रभावकारिता के स्तर का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है पश्चिम बंगाल के पुरबा मेदिनीपुर जिले के शिक्षक। अध्ययन के नतीजों से पता चलता है कि माध्यमिक की शिक्षण प्रभावशीलता का समग्र स्तर पुरबा मेदिनीपुर जिले में स्कूल शिक्षक अच्छे हैं। यह भी पता चला है कि हालांकि माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों के बीच शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर में लिंग, स्ट्रीम, प्रशिक्षण स्थिति और योग्यता, के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है लेकिन यह पाया गया है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को स्कूल स्थान के आधार पर उनके शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर के बीच महत्वपूर्ण अंतर है ।

चौधरी (2014) ने "लिंग, आयु, अनुभव और योग्यता के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की प्रभावशीलता" पर एक अध्ययन किया है। अध्ययन से पता चला कि अधिकांश शिक्षक और पुरुष दोनों के शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में औसत स्तर की प्रभावशीलता

थी। अध्ययन दर्शाता है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की प्रभावशीलता में उनके लिंग, आयु, अनुभव और योग्यता के मामले में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

मलिक और शर्मा (2013) ने "व्यावसायिक प्रतिबद्धता के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता" पर एक अध्ययन किया है। इस अध्ययन से स्पष्ट है कि शिक्षकों का लिंग उनके शिक्षण प्रभावकारिता के साथ कोई संबंध नहीं रखता है। यह भी पता चलता है कि स्कूलों की स्थानीयता शिक्षकों के शिक्षण प्रभावकारिता को प्रभावित नहीं करती है।

खटाल (2010) द्वारा किए गए अध्ययन से पता चला है कि शिक्षण के लिए अभियोग्यता एक शिक्षक के शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करती है । प्रभावी शिक्षक शिक्षण अभियोग्यता उच्च रखते हैं गैर–प्रभावी शिक्षक की तुलना में । उच्च शिक्षण अभियोग्यता वाले शिक्षक में कम योग्यता वाले शिक्षक की तुलना में शिक्षण प्रभावशीलता बेहतर होने की संभावना है ।

सोढ़ी (2010) ने "स्कूल संगठनात्मक जलवायु के संबंध में पंजाब के माध्यमिक विद्यालय क शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता" पर एक अध्ययन किया है। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि लिंग, स्थान, स्ट्रीम और शिक्षण अनुभव समूहों में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं थे।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन म निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर पाया जायेगा।
2. प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर पाया जायेगा।
3. प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर पाया जायेगा।

शोध न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन में शोधकर्ता ने महाविद्यालय के प्रथम वर्ष में प्रवेशित –50 (25 महिला, 25 पुरूष) एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त –50 (25 महिला, 25 पुरूष) शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया है। सभी महाविद्यालय छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के भिलाई शहर के अंतर्गत है।

सांख्यकीय विधि

उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर 't' मूल्य की गणना द्वारा ज्ञात किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर के विषय में अध्ययन किया गया है। शिक्षकीय शिक्षकीय प्रभावशीलता के मापन हेतु निम्न उपकरण का उपयोग किया गया है।

चर

शिक्षकीय शिक्षकीय प्रभावशीलता

मापनी

शिक्षकीय शिक्षकीय प्रभावशीलता

निर्माणकर्त्ता

डॉ. प्रमोद कुमार एवं डॉ. डी.डी.एन. माथुर

ऑकड़ों का विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं का परीक्षण

प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर का अध्ययन करने के लिए दोनों समूहों– के शिक्षकीय शिक्षकीय प्रभावशीलता के प्राप्तांको के मध्य 't' मूल्य की गणना की गणना की गई है । प्राप्त परिणामों को सारणी क्रमांक 1 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी क्रमांक - 1

प्रथम वर्श में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में तुलना

चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"टी" मूल्य
प्रथम वर्ष में प्रवेशित शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	50	270.19	51.70	4.91
पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	50	317.06	43.30	
स्वतंत्रता कोटी df = 48 P < 0.01 सार्थक अंतर है।				

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने में महाविद्यालय के प्रथम वर्ष में प्रवेशित शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की "िक्षण के प्रति शिक्षकीय प्रभावशीलता में प्रदत्तों की संख्या 50 है। जिसका मध्यमान 270.19 तथा प्रमाणिक विचलन 51.70 है। महाविद्यालय के पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की संख्या 50 है। जिसका मध्यमान 317.06 तथा प्रमाणिक विचलन 43.30 है। स्वतंत्रता कोटी df = 98 है। दोनों वर्गो की तुलना करने के लिए t मान की गणना की गई है। t का मान 4.91 प्राप्त हुआ। मान की सार्थकता ज्ञात करने हेतु सारणी अवलोकन किया गया जो स्वतंत्र कोटी 0.01 स्तर के सारणी मान से अधिक है। अतः 0.01 स्तर पर दोनों वर्गो की "िक्षण के प्रति शिक्षकीय प्रभावशीलता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः स्पष्ट है कि प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर पाया जायेगा।यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी क्रमांक 2

प्रथम वर्श में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त पुरूश शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर पाया जायेगा।

चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"टी" मूल्य
प्रथम वर्ष में प्रवेशित पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	25	270.5	50.91	2.95
पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक पुरूष प्रशिक्षणार्थी	25	310.12	43.68	
स्वतंत्रता कोटी df = 48 P < 0.01 सार्थक अंतर है।				

उपरोक्त सारणी स्पस्ट है कि महाविद्यालय के प्रथम वर्ष में प्रवेशित पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की f"k्षण के प्रति शिक्षकीय प्रभावशीलता में प्रदत्तों की संख्या 25 है। जिसका मध्यमान 270.5 तथा प्रमाणिक विचलन 50.91 है। महाविद्यालय के पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की संख्या 25 है। जिसका मध्यमान 310.12 तथा प्रमाणिक विचलन 43.68है। स्वतंत्रता कोटी df = 48 है। दोनों वर्गो की तुलना के लिए t का मान 2.95 प्राप्त हुआ। मान की सार्थकता ज्ञात करने हेतु सारणी अवलोकन किया गया जो स्वतंत्र कोटी 0.01 स्तर के सारणी मान से अधिक है। अतः 0.01 स्तर पर दोनों वर्गो की f"k्षण के प्रति शिक्षकीय प्रभावशीलता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः स्पष्ट है कि प्रथम वर्ष में प्रवेशित पुरूष एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर पाया जायेगा।यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी क्रमांक 3

प्रथम वर्श में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर पाया जायेगा।

चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	"टी" मूल्य
प्रथम वर्ष में प्रवेशित महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	25	269.88	52.55	3.98
पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	25	324	43.02	
स्वतंत्रता कोटी df = 48 P < 0.01 सार्थक अंतर है।				

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने में महाविद्यालय के प्रथम वर्ष में प्रवेशित महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की f"k्षण के प्रति शिक्षकीय प्रभावशीलता में प्रदत्तों की संख्या 25 है। जिसका मध्यमान 269.88 तथा प्रमाणिक विचलन 52.55 है। महाविद्यालय के पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की संख्या 25 है। जिसका मध्यमान 324 तथा प्रमाणिक विचलन 43.02 है। स्वतंत्रता कोटी df = 48 है। दोनों वर्गो की तुलना में t का मान 3.98प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्र कोटी 0.01 स्तर के सारणी मान से अधिक है। अतः 0.01 स्तर पर दोनों वर्गो की f"k्षण के प्रति शिक्षकीय प्रभावशीलता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः स्पष्ट है कि प्रथम वर्ष में प्रवेशित महिला एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर पाया जायेगा।यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपरोक्त परिणामों से यह तथ्य स्पष्ट है कि प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों दोनों ही समूहों में शिक्षकीय शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर है । वर्ष में प्रवेशित पुरूष एवं महिला एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त पुरूष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में भी शिक्षकीय शिक्षकीय प्रभावशीलता में अंतर है । डोलॉरेस एवं अर्नेस्ट (2018) ने भी अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि इन–सर्विस प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों के प्रदर्शन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण साबित हुये। सभ्यता की उन्नति शिक्षक की योग्यता पर निर्भर है, आज शिक्षक की जिम्मेदारी व उसका उत्तरदायित्व बहुत अधिक बढ़ गया है। आवश्यकता इस बात की है कि सहायक प्रध्यापिकाओं की शिक्षकीय प्रभावशीलता में भी समानुपातिक स्तर पर सुधार किया जाये। ताकि शिक्षक अपनी पूर्ण योग्यता, क"ालता एवं दृढ़ता के साथ f"k्षण क्षेत्र में प्रविष्ट हो सके। शिक्षक के व्यवहार परिवर्तन का प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। खटाल (2010) द्वारा किए गए अध्ययन से उच्च शिक्षण अभियोग्यता वाले शिक्षक में कम योग्यता वाले शिक्षक की तुलना में शिक्षण प्रभावशीलता बेहतर होने की संभावना है । शिक्षक उस दीपक की तरह होता है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रका"ात करता है। यदि शिक्षकोंकी शिक्षकीय प्रभावशीलता में कभी होगी तो फिर f"k्षा के स्तर को ऊँचा नहीं उठाया जा सकता है। f"k्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए शिक्षको को यथासंभव हर सुविधायें एवं प्रशिक्षण प्रदान की जानी चाहिये जिससे f"k्षण के प्रति उनकी कार्य कुशलता व शिक्षकीय प्रभावशीलता का विकास हो।

संदभ ग्रंथ सूची

1. *आमदी, ए.सी. एवं अल्लगोआ, ई.सी. (2017). डेमोग्रॅफिक वेरियबल्स आस डिटर्माइनेंट्स ऑफ टीचर्स' एफेक्टिव्नेस इन क्लासरूम मॅनेज्मेंट इन सेकेंडरी स्कूल्स इन रिवर्स स्टेट, नाइजीरिया. इंटरनॅशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव डेवेलपमेंट एण्ड पॉलिसी स्टडीस, 5(4): 65–70.*
2. *ख़टाल, मोहन (2010). साइकोलॉजिकल कॉरेलेट्स ऑफ टीचर एफेक्टिव्नेस. इंटरनॅशनल रेफर्ड रिसर्च जर्नल, 3*
3. *चौधरी, एस. आर. (2014). एफेक्टिव्नेस ऑफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स इन रीलेशन टू देयर जेंडर, एज, एक्सपीरियेन्स आंड क्वालिफिकेशन. द*

क्लेरियन–इंटरनॅशनल मल्टिडिसिप्लिनरी जर्नल, 3(1), 141–148.

4. *डोलॉरेस मेंसाह हेरविए एवं अर्नेस्ट क्रिस्चियन वींफूल (2018) एनहॅन्सिंग टीचर्स' पर्फॉर्मेन्स थ्रू ट्रैनिंग आंड डेवेलपमेंट इन घाना एजुकेशन सर्विस (ए केस स्टडी ऑफ एबिनीज़र सीनियर हाई स्कूल), जर्नल ऑफ ह्यूमन रीसोर्से मॅनेज्मेंट 2018; 6(1): 1–8 http://www.sciencepublishinggroup.com/j/jhrm doi: 10.11648/j.jhrm.20180601.11*
5. *बर्मन, प्रणब एवं दाश, उमसनकार. (2016). टीचिंग एफेक्टिव्नेस ऑफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स इन थे डिस्ट्रिक्ट ऑफ पूर्बा मेदिनीपुर, वेस्ट बेंगल. 21. 50–63. 10.9790/0837-2107075063.*
6. *मलिक, यु एवं शर्मा, डी. के. (2013). टीचिंग एफेक्टिव्नेस ऑफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स इन रीलेशन टू देयर प्रोफेशनल कमिटमेंट. इंटरनॅशनल एजुकेशनल इ–जर्नल, (क्वॉर्टर्ली), 2(4), 148–154.*
7. *रॉय, राधा एवं हलदर, उज्ज्वल. (2018). टीचर एफेक्टिव्नेस: आ सेल्फ़–रिपोर्ट स्टडी ओं सेकेंडरी स्कूल टीचर्स. 5. 914–919.*
8. *सोढी, बी. (2010). टीचर एफेक्टिव्नेस ऑफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स ऑफ पंजाब इन रीलेशन टू स्कूल ऑर्गनाइज़ेशनल क्लाइमेट. अनपब्लिश्ड पी.एच.डी. थीसिस, पंजाब यूनिवर्सिटी, Indian ETD Repository @ INFLIBNET*